Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ जितिया व्रत के नियम ॥

॥ जीमूतवाहन सबका मंगल करें ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अष्टमी के व्रत का क्रम ॥

तीन दिनों का क्रम

जीवित्पुत्रिका या जितिया में सप्तमी को नहाय-खाय, आश्विन कृष्ण अष्टमी को मुख्य उपवास और नवमी को पारण की परंपरा है। कभी तिथियाँ दिन में बदलती हैं; अपने शहर का पंचांग और पारिवारिक रीति देखकर व्रत का दिन चुनें।

संकल्प और उपवास

स्नान कर जीमूतवाहन का स्मरण और बच्चों के मंगल की प्रार्थना करें। अनेक परिवार अष्टमी पर निर्जला उपवास रखते हैं, लेकिन यह हर व्यक्ति के लिए सुरक्षित या अनिवार्य नहीं है। अपनी आयु, स्वास्थ्य और दवाओं को देखकर जल या भोजन लेने का निर्णय करें।

पूजा और कथा

साफ स्थान पर जीमूतवाहन के चित्र या प्रतीक के सामने रोली, अक्षत, फूल, धूप-दीप और उपलब्ध प्रसाद रखें। उनकी कथा सुनें; कहीं चील-सियारिन की कथा भी पढ़ी जाती है। स्थानीय रीति में सूर्य को अर्घ्य या जिउतिया धागा हो तो उसी के अनुसार करें।

शांत आचरण

घर में सहयोग और सम्मान रखें। व्रत के नाम पर क्रोध, अपमान या किसी पर दबाव से बचें। माता का विश्राम और पानी की जरूरत का ध्यान परिवार के अन्य सदस्य भी रखें।

॥ स्वास्थ्य, पारण और सावधानी ॥

निर्जला व्रत में सावधानी

गर्भावस्था, स्तनपान, मधुमेह, गुर्दे की बीमारी, गर्मी में काम या नियमित दवाओं की स्थिति में लंबा निर्जला व्रत जोखिमपूर्ण हो सकता है। चिकित्सकीय सलाह को प्राथमिकता दें। चक्कर, तेज कमजोरी या बेहोशी लगे तो तुरंत जल लें और सहायता माँगें।

नवमी का पारण

मुख्य व्रत के बाद नवमी को अपनी परंपरा तथा स्थानीय पंचांग के अनुसार पारण किया जाता है। प्रायः स्नान और प्रार्थना के बाद जल, प्रसाद तथा भोजन ग्रहण करते हैं। निश्चित समय को दूसरे वर्ष या शहर से न लें।

कठोर दावों से बचें

“व्रत कभी छोड़ा नहीं जा सकता” या “भूल होने पर बच्चे को हानि होगी” जैसे कथन सार्वभौमिक नियम नहीं हैं। संतान की बीमारी या दुर्घटना को माता के उपवास से न जोड़ें। बच्चों की सुरक्षा, पोषण और चिकित्सा देखभाल पूरे परिवार की जिम्मेदारी है।

व्रत श्रद्धा का विषय है, स्वास्थ्य या आयु की गारंटी नहीं। आवश्यक दवा और चिकित्सकीय सहायता कभी न रोकें।

॥ जीमूतवाहन सबका मंगल करें ॥